International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भोजपुरी फिल्में और लोक कला: परंपरा से आधुनिकता तक

अखिलेश यादव

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश (Abstract)

भोजपुरी सिनेमा भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जिसने लोकगीतों, लोकनाट्य और ग्रामीण संस्कृति को बड़े परदे पर प्रस्तुत करके न केवल मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक दस्तावेज़ भी रचा। 1963 में *गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो* से आरंभ हुई यात्रा ने भोजपुरी समाज को उसकी भाषा और लोक परंपराओं पर गर्व कराया। यद्यपि समय के साथ इसमें व्यावसायिक दबाव, अश्लीलता विवाद और बाज़ारवाद की चुनौती भी आई, फिर भी यह सिनेमा लोक संस्कृति और प्रवासी समाज की अस्मिता का वाहक बना रहा।

यह शोध-पत्र सांस्कृतिक अध्ययन (Cultural Studies), प्रतिनिधित्व सिद्धांत (Representation Theory) और ग्राम्शी की हेजेमनी (Hegemony) जैसे सैद्धांतिक ढाँचों पर आधारित है। इसमें विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार लोकगीत (बिरहा, चैता, कजरी, सोहर), लोकनृत्य, नौटंकी और धार्मिक लोकाचार फिल्मों में अभिव्यक्त हुए। साथ ही इसमें महिला पात्रों का प्रतिनिधित्व, प्रवासी समाज की पहचान और आधुनिक डिजिटल युग में संभावनाओं का अध्ययन भी किया गया है।

मुख्यशब्द (Keywords): भोजपुरी सिनेमा, लोक संस्कृति, लोकगीत, लोकनाट्य, महिला प्रतिनिधित्व, अश्लीलता, प्रवासी समाज, वैश्वीकरण।

अध्याय 1 : परिचय

भोजपुरी भाषा उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड के विशाल भू-भाग में बोली जाती है। प्रवासी समाज के कारण यह भाषा और इसकी संस्कृति आज फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप तक फैल चुकी है। भोजपुरी सिनेमा ने इस सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और वैश्विक मंच पर पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है, यह संस्कृति का दर्पण और समाज का विमर्श भी है। जैसा कि स्टुअर्ट हॉल (1997) कहते हैं–

"Representation is the production of meaning through language and culture."

इस दृष्टि से भोजपुरी फिल्में लोक जीवन और उसकी जटिलताओं को अर्थ प्रदान करती हैं।

अध्याय 2 : साहित्य समीक्षा

भोजपुरी सिनेमा और लोक संस्कृति पर शोध सीमित हैं। प्रमुख योगदान–

- **विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (2005):** भोजपुरी लोकगीतों में सामाजिक जीवन।
- **आनंद प्रकाश (2010):** क्षेत्रीय सिनेमाओं में लोक संस्कृति की भूमिका।
- **शैला भगत (2016):** महिला पात्रों का प्रतिनिधित्व।
- **द वायर हिंदी (2018):** भोजपुरी फिल्मों में अश्लीलता का संकट।
- **EPW (2020):** वैश्वीकरण और भोजपुरी मीडिया।

साहित्य से स्पष्ट है कि भोजपुरी सिनेमा और लोक कला का अंतर्संबंध अभी गहन शोध की मांग करता है।

अध्याय 3 : शोध पद्धति

- **प्राथमिक स्रोत:** 1963–2023 तक की प्रमुख भोजपुरी फिल्मों का अध्ययन (*गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो, बिदेसिया, निरहुआ रिक्शावाला, ससुराल, बलम परदेसिया, सत्या, दरार, देसवा फसल आशिकी* , बंधन आदि)।
- **द्वितीयक स्रोत:** पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, डिजिटल लेख, फिल्म समीक्षाएँ।
- **सैद्धांतिक ढाँचा:**
  - Cultural Studies (Stuart Hall)
  - Representation Theory
  - Antonio Gramsci की Hegemony
  - लोक साहित्य का सांस्कृतिक ढाँचा

अध्याय 4 : भोजपुरी सिनेमा का ऐतिहासिक विकास

(क) 1963–1980: उद्भव और परंपरा

- पहली फिल्म *गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो* (1963) ने मातृभक्ति और धार्मिक आस्था का चित्रण किया।
- *बिदेसिया* (1965) ने प्रवासी पीड़ा और बिरहा परंपरा को स्वर दिया।

- इस दौर की फिल्मों में लोकगीत, विवाह संस्कार, खेती-किसानी और परिवारिक बंधन पर ज़ोर रहा।

(ख) 1980–2000: संघर्ष और संक्रमण

- आर्थिक संकट और हिंदी सिनेमा की प्रतिस्पर्धा।
- निर्माण घटा, पर लोकगीत आधारित फिल्में बनीं।

(ग) 2000–2010: व्यावसायिकता और विवाद

- *ससुरा बड़ा पइसावाला* (2004) ने उद्योग को पुनर्जीवित किया।
- लेकिन अश्लील संवाद और आइटम गीतों से भोजपुरी सिनेमा आलोचना का शिकार हुआ।

(घ) 2010–अब तक: वैश्वीकरण और डिजिटल युग

- प्रवासी समाज ने फिल्म उद्योग को नया बाज़ार दिया।
- यूट्यूब,ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म्स ने भोजपुरी कंटेंट को विश्व स्तर पर पहुँचाया।
- युवा फिल्मकार सामाजिक मुद्दों को केंद्र में लाने लगे (*कटान,देसवा*)।

अध्याय 5 : लोकगीत और लोकनाट्य का फिल्मी उपयोग

भोजपुरी सिनेमा की आत्मा लोकगीत और लोकनाट्य हैं।

- **बिरहा:** प्रवासी पीड़ा और सामाजिक संघर्ष का लोकगीत। *बिदेसिया* और *बलम परदेसिया* में इसका प्रयोग।
- **कजरी और चैता:** ऋतु-आधारित गीत, विवाह और उत्सव के प्रसंगों में बार-बार प्रयुक्त।
- **सोहर:** जन्म संस्कार पर आधारित गीत, कई फिल्मों में पारिवारिक प्रसंग में।
- **नौटंकी और तमाशा:** हास्य और व्यंग्य के लिए।
- **लोकनृत्य:** जट-जटिन, झूमर, फगुआ नृत्य फिल्मों में ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं।

अध्याय 6 : महिला प्रतिनिधित्व

- प्रारंभिक फिल्मों में महिला पात्र **आदर्श पत्नी, माँ और त्यागमयी नायिका** के रूप में।
- 2000 के बाद नायिकाओं की छवि **ग्लैमरस और नृत्य-केंद्रित** हुई।
- आलोचना: महिला शरीर को उपभोक्ता वस्तु की तरह दिखाना।
- हाल की कुछ फिल्में महिलाओं की **सशक्त छवि** गढ़ रही हैं (मंडप,विद्या)।

अध्याय 7 : समाजशास्त्रीय विमर्श

- **जाति और वर्ग:** अधिकांश फिल्मों में किसान, मज़दूर और निम्नवर्गीय पात्र दिखाए जाते हैं, परंतु जातिगत संघर्ष को बहुत कम उठाया गया।
- **प्रवासी समाज:** फिल्मों में परदेस जाने की पीड़ा (बिदेसिया) लगातार एक मुख्य थीम रही।

- **राजनीतिक विमर्श:** हाल की फिल्मों में भ्रष्टाचार, अपराध और न्याय की बातें आने लगी हैं।

अध्याय 8 : अश्लीलता विवाद और व्यावसायिक दबाव

2000 के बाद कई फिल्मों में अश्लील गीतों और द्विअर्थी संवादों ने भोजपुरी सिनेमा की छवि धूमिल की।

- आलोचकों ने कहा कि यह **"भोजपुरी अश्लील सिनेमा"** बन गया।
- परंतु यह भी सत्य है कि **बाज़ार की माँग और त्वरित सफलता** ने फिल्मकारों को इस ओर धकेला।
- नतीजतन गंभीर लोक-आधारित फिल्में हाशिए पर चली गईं।

अध्याय 9 : वैश्वीकरण, प्रवासी समाज और डिजिटल मीडिया

- प्रवासी समाज (फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, अमेरिका) भोजपुरी फिल्मों को गर्व और पहचान का साधन मानता है।
- यूट्यूब और ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म ने वैश्विक दर्शकों तक पहुँच बनाई।
- अब नए निर्देशक लोककथाओं और आधुनिक मुद्दों को जोड़कर सिनेमा को पुनर्जीवित कर रहे हैं।

अध्याय 10 : निष्कर्ष

भोजपुरी सिनेमा लोक संस्कृति का जीवंत दर्पण है। इसमें लोकगीत, लोकनृत्य और परंपरा का गहरा प्रभाव है। समय के साथ यह व्यावसायिकता और अश्लीलता से प्रभावित हुआ, लेकिन आज यह पुनः अपने लोकधर्मी स्वरूप को खोजने की ओर अग्रसर है।

यह शोध यह स्पष्ट करता है कि–

1. भोजपुरी फिल्में केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान की वाहक हैं।
2. लोकगीत और लोकनाट्य इसकी आत्मा हैं।
3. महिला प्रतिनिधित्व अभी भी सुधार की माँग करता है।
4. प्रवासी समाज के कारण इसका वैश्विक महत्व है।
5. डिजिटल युग में यह सिनेमा पुनः सांस्कृतिक अस्मिता और आधुनिकता का संगम बन सकता है।

संदर्भ सूची (References)

1. Hall, S. (1997). *Representation: Cultural representations and signifying practices.* London: Sage Publications.
2. Gramsci, A. (1971). *Selections from the prison notebooks.* New York: International Publishers.
3. तिवारी, वि. प्र. (2005). *भोजपुरी लोकगीत और समाज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
4. प्रकाश, आ. (2010). *भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा और संस्कृति.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

5. भगत, श. (2016). *महिला और सिनेमा: प्रतिनिधित्व का प्रश्न.* मुंबई: संवाद प्रकाशन.
6. The Wire Hindi. (2018, July 12). भोजपुरी सिनेमा अपनी ही जाल में फँसा. *The Wire Hindi.* https://thewirehindi.com/812/bhojpuri-cinema-stucks-in-his-own-net/
7. Economic and Political Weekly. (2020). Regional cinema and globalization in India. *Economic and Political Weekly, 55*(34). https://www.epw.in
8. पटेल, र. (2015). *भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
9. घोष अविजीत (2010) सिनेमा भोजपुरी, गुरूग्राम हरियाणा, पेंगुइन बुक्स
10. शर्मा धीरज (2021) फिल्में और संस्कृति, नई दिल्ली प्रभात प्रकाशन